प्रयोगवाद

डॉ० अनिरुद्ध सिंह
साखाड़ी महाविद्यालय

आधुनिक हिन्दी कविता के इतिहास में सन् 1943 ई० में अज्ञेय द्वारा संपादित 'तार सप्तक' के प्रकाशन के साथ ही एक नया मोड़ उपस्थित होता है। समकालीन राजनीति और समाज में हो रहे परिवर्तनों को अभिव्यक्ति देने में असमर्थ होने वाली छायावादी कविता की प्रतिक्रिया में जन्मी प्रगतिवादी काव्यधारा के समानांतर ही प्रयोगवाद काव्यधारा का उदय होता है। विकास प्रक्रिया में प्रयोगवाद छायावादी कविता की रूमानियत तथा प्रगतिवादी कविता की वैचारिक प्रतिबद्धता के विरोध में खड़ा होता है। छायावादी कविता जहाँ जीवन-यथार्थ का निषेध करने में लगी है वहीं प्रगतिवाद एक खास वाद के तहत यथार्थ को देखते हुए यथार्थ और कविता में कोई फर्क ही नहीं रहने देता।

ऐसे में जीवन-यथार्थ को अभिव्यक्त करने के लिए स्वानुभूति की प्रामाणिकता को रचना के केन्द्र में रखते हुए प्रयोगवाद का विकास होता है जो संवेदनात्मक स्तर पर ही नहीं बल्कि शिल्पगत स्तर पर भी परिवर्तन घटित करते हुए कविता को छायावादी की ठहरी हुई अभिव्यंजना प्रणाली तथा प्रगतिवाद की अभिधात्मकता तथा सपाटबयानी से निकलकर नवीन शिल्पगत आयाम प्रदान करता है।

Scanned with CamScanner

यद्यपि इन कविताओं को अज्ञेय ने प्रयोगशील की संज्ञा दी तथापि इस धारा के ~~कवियों~~ विरोधी कवियों तथा आलोचकों ने इसे प्रयोगवाद की संज्ञा से जड़ीभूत कर दिया। इन आलोचकों ने इनको व्यक्तिनिष्ठ, समाजविरोधी तथा नीरस कह कर इस काव्यधारा का विरोध किया लेकिन यह कविता अपनी विशिष्टताओं के बल पर विकसित होती गई और आगे चलकर नयी कविता में पर्यवसित हो गई।

प्रयोगवाद में प्रयोग शब्द नये जीवन सत्यों को पाने की बेचैनी का बोधक है। अज्ञेय ने 'तार सप्तक' तथा 'दूसरा तार सप्तक' की भूमिका में प्रयोगशील शब्द को प्रयुक्त किया है। यह प्रयोगशील नये जीवन सत्यों के अन्वेषण का माध्यम है। अज्ञेय ने इसे दुहरा माध्यम माना है। दूसरे सप्तक की भूमिका में वे लिखते हैं -"प्रयोग अपने आपमें इष्ट नहीं है, वह साधन है और दोहरा साधन है। क्योंकि एक तो वह उस प्रेषण की क्रिया को और उसके साधनों को जानने का भी साधन है अर्थात प्रयोग द्वारा कवि अपने सत्य को अधिक अच्छी तरह जान सकता है और अच्छी तरह अभिव्यक्त कर सकता है।" प्रयोग की इस धारणा को ग्रहण कर विकसित होने वाली प्रयोगवादी कविता की अपनी कुछ विशेषताएं हैं जो उसे पूर्ववर्ती काव्यधाराओं से भिन्न करती हैं।

Scanned with CamScanner

1- स्वानुभूति की प्रामाणिकता की चिन्ता -

प्रयोगवाद की आधारभूत विशेषता है। स्वानुभूति यहाँ छायावादोत्तर गीतिकवियों की तरह एकांगी न होकर संपूर्ण वैचारिक धरातल पर व्याप्त है। इस स्वानुभूति में न तो प्रगतिवाद का बड़बोलापन है और न ही छायावाद की वायवीयता है। इस संदर्भ में अज्ञेय द्वारा रचित कविता 'जितना तुम्हारा सच है' की ये पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं -

'मौन भी अभिव्यंजना है
जितना तुम्हारा सच है
उतना ही कहो।'

2- समूह की तुलना में इकाई पर बल -

प्रयोगवाद की विशेषता है और यह विशेषता अनेक धरातलों पर दिखाई देता है। समाज और व्यक्ति के संदर्भ में प्रयोगवादी कविता व्यक्ति की अस्मिता पर बल देती है। प्रगतिवाद समाज के परिप्रेक्ष्य में व्यक्ति का आकलन करता है जबकि प्रयोगवाद व्यक्ति के परिप्रेक्ष्य में सामाजिक पुनर्निर्माण को प्रस्तावित करता है। अज्ञेय द्वारा रचित नदी के द्वीप, यह दीप अकेला आदि कवितायें प्रयोगवाद की इस वैचारिक को प्रस्तावित हैं -

'किन्तु हम हैं द्वीप
हम धारा नहीं है।'
स्थिर समर्पण है हमारा।'

Scanned with CamScanner

'यह दीप अकेला' कविता की भी निम्नलिखित पंक्तियाँ इस संदर्भ में उल्लेखनीय हैं -

'यह दीप, अकेला, स्नेह-भरा
है गर्व-भरा मदमाता, पर
इसको भी पंक्ति को दे दो।'

अज्ञेय लिखते हैं - 'व्यक्ति समाज से स्वतंत्र नहीं है, लेकिन समाज में स्वतंत्र है।'

3- शब्द पर बल देती है -

भाषा के संदर्भ में प्रयोगवादी कविता शब्द पर बल देती है। 'भवन्ती' में अज्ञेय ने लिखा है - 'कविता शब्द से शुरू होती है और शब्द पर ही खत्म हो जाती है।' प्रयोगवादी कविता में शब्द बाह्य उपकरण मात्र नहीं है बल्कि कविता की आंतरिक सत्ता तथा आत्मा है।

4- क्षण पर बल देती है -

प्रयोगवादी कविता विराट समय और क्षण की तुलना में क्षण पर बल देती है। वह मानती है कि समय तो क्षणों का पुंज मात्र है, वास्तविक अस्तित्व क्षण का ही है। अज्ञेय द्वारा रचित कविता 'सर्जना के क्षण' की ये पंक्तियां प्रयोगवाद में क्षण की महत्ता को संकेतित करती हैं -

और सब समय पराया है

Scanned with CamScanner

सिर्फ उतना ही क्षण अपना
तुम्हारी पलकों का कंपना।'

क्षणवाद के रूप में ही प्रयोगवादी कविता इतिहास का निषेध कर वर्तमान पर बल देती है।

5- यथार्थ के प्रति उन्मुक्त दृष्टि - प्रयोगवाद की एक अन्य विशेषता है। यथार्थ को वादमुक्त होकर स्वविवेक से देखने के कारण ही ऐसा है। दूसरा सप्तक की भूमिका में अज्ञेय ने साफ कहा है कि - 'प्रयोग का कोई वाद नहीं है। हम वादी नहीं रहे, नहीं हैं।' वैचारिकता के अलग-अलग आयामों के कारण प्रत्येक कवि की अपनी अलग-अलग दृष्टि है तथा इसी कारण प्रयोगवाद में अन्तर्विरोध का स्वर भी मुखर है जो नई कविता में पूर्णतया उभर कर आता है।

6- यौनकुंठा का प्राबल्य - अज्ञेय ने तारसप्तक की भूमिका में लिखा है - 'आज के साधारण मानवों का मन यौन-वर्जनाओं का पुंज है।' यौन वर्जना यौनकुंठा को जन्म देती है। यौनकुंठा के धरातल पर ही अधिकांश प्रयोगवादी कवि यथार्थ की प्रस्तावना करते हैं। अज्ञेय, गिरिजा कुमार माथुर, धर्मवीर भारती, नरेश मेहता आदि कवियों की कविताओं में यथार्थ यौनकुंठा में लिपटा हुआ दिखाई देता है। अज्ञेय की कविता सावन मेघ की ये पंक्तियाँ इस संदर्भ में उल्लेखनीय है -

Scanned with CamScanner

'घिर गया नभ, उमड़ आये मेघ काले,
भूमि के कम्पित उरोजों पर झुका - सा
विशाद, श्वासाहत, चिरातुर
छा गया इन्द्र का नील वक्ष।'

धर्मवीर भारती यौन को अनैतिक मानने के स्वर के विरु
प्रनय के मांसल स्वरूप की अभिव्यक्ति करते हुए उसे
नैतिक दर्जा देने की वकालत करते हैं -

'अगर मैंने किसी के होठ के पाटल कभी चूमे
अगर मैंने किसी के नैन के बादल कभी चूमे
महज इससे किसी का प्यार मुझ पर पाप कैसे हो।
महज इससे किसी का स्वर्ग मुझ पर शाप कैसे हो।'

यह स्वर अन्य प्रयोगवादी कवियों में भी सुनाई देता है।

7- कविता और बौद्धिकता के अंतर्संबंधों -

सामान्यत: कविता भावों की अभिव्यक्ति मानी जाती थी। लेकिन प्रयोगवाद ने अनुभूति को बौद्धिकता से संपृक्त करते हुए कविता में अभिव्यक्त किया। अपनी प्रेमिका के साथ हरी घास पर क्षण भर बैठने की अनुभूति को व्यक्त करते हुए कवि भावनाओं में नहीं बह जाता। वह बौद्धिक ढंग से ही अपनी भावनाओं को व्यक्त करता है -

आओ बैठो
क्षण भर तुम्हें निहारूं।
झिझक न हो कि निरखना
दबी वासना की विकृति है।

8- शिल्प को प्राथमिकता -

उनके यहाँ शिल्प सिर्फ कहने का ही माध्यम नहीं बल्कि जानने का भी माध्यम है। अज्ञेय ने दूसरा सप्तक की भूमिका में लिखा है -' जो व्यक्ति का अनुभूत है, उसे समष्टि तक कैसे उसकी सम्पूर्णता में पहुंचाया जाये यही पहली समस्या है, जो प्रयोगशीलता को ललकारती है क्योंकि कवि अनुभव करता है कि भाषा का पुराना व्यापकत्व उसमें नहीं है। अतः प्रयोगवादी कवि शब्द बिम्ब प्रतीक छन्द इत्यादि के प्रति जागरूक और प्रयोगशील रहा है।

भवानी प्रसाद मिश्र की कविता 'बूंद टपकी एक नभ से' की ये पंक्तियाँ दृश्य बिम्ब का सशक्त उदाहरण है -

'बूंद टपकी एक नभ से
किसी ने झुक कर झरोखे से
कि जैसे हंस दिया हो
"हंस रही-सी औब से जैसे
किसी को कस दिया हो।'

Scanned with CamScanner